

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 6: भगवान का प्राकट्य और मन्दराचल

14 September 2026



देवताओं और असुरों ने मिलकर धरती से उखाड़ा वह विशाल पर्वत उन सबके लिए भी अत्यधिक भारी सिद्ध होता है — जब तक भगवान उसे एक ही हाथ से गरुड़ पर नहीं उठा लेते और मानो खेल-खेल में क्षीरसागर के तट तक ले जाते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। पिछले अध्याय में ब्रह्मा देवताओं को माया से परे तट तक ले गए और अदृश्य परम भगवान की एक महान स्तुति की। आठवें स्कन्ध का यह छठा अध्याय उस प्रार्थना का उत्तर देता है: स्वयं भगवान सहस्र सूर्यों के समान तेजोमय प्रकट होते हैं और क्षीरसागर-मन्थन की योजना बताते हैं। वे देवताओं को एक साझे उद्देश्य के लिए असुरों से सन्धि करने का परामर्श देते हैं, मन्दराचल को मन्थन-दण्ड और नागराज वासुकि को रस्सी बनाने को कहते हैं, और आने वाले विष तथा प्रलोभनों के प्रति सचेत करते हैं। फिर, जब वह विशाल पर्वत देवताओं और असुरों दोनों के बल को थका देता है, भगवान उसे स्वयं गरुड़ पर उठाकर सागर तक ले जाते हैं।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 6 (षष्ठ अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: भगवान का प्राकट्य और मन्दराचल का वहन
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — ब्रह्मा की स्तुति तथा भगवान का परामर्श सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: वह दिव्य तट जहाँ भगवान प्रकट होते हैं; बलि का राज्य; क्षीरसागर के तट का मार्ग
- केन्द्रीय विषय: भगवान देवताओं के समक्ष प्रकट होते हैं, उन्हें असुरों के साथ सन्धि में मन्दराचल और वासुकि से क्षीरसागर मथने का निर्देश देते हैं, और गिरे हुए पर्वत को सागर तक ले जाते हैं
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 6, श्लोक 1-39
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

पंचम अध्याय में देवता — दुर्वासा के शाप से नष्ट और असुरों से पराजित — ब्रह्मा की शरण गए, जो उन्हें माया के अन्धकार से परे धाम तक ले गए और परम भगवान की स्तुति की। अब वह प्रार्थना फल देती है। यह अध्याय तब आरम्भ होता है जब स्रष्टा की स्तुति से द्रवित होकर भगवान एकत्र देवताओं के समक्ष अपने तेजोमय रूप में प्रकट होते हैं और वह दिव्य योजना प्रकट करते हैं जिससे उनका सौभाग्य लौटेगा।

भगवान सहस्र सूर्यों के समान प्रकट होते हैं

श्रीशुकदेव राजा परीक्षित से कहते हैं कि इस प्रकार देवताओं द्वारा स्तुत होकर सर्वशक्तिमान भगवान श्रीहरि एक साथ उदित सहस्र सूर्यों के तेज से उनके समक्ष प्रकट हुए। वह तेज इतना चकाचौंध करने वाला था कि देवता आकाश, दिशाएँ, पृथ्वी, यहाँ तक कि स्वयं को भी न देख सके — तब भगवान को कैसे देखते? केवल ब्रह्मा और शिव उस निर्मल रूप को देख सके: मरकत के समान श्याम, कमल के भीतरी भाग-सी अरुण आँखें, जलते स्वर्ण-सा पीत रेशमी वस्त्र, प्रत्येक अंग में मनोहर, रत्नजड़ित मुकुट और कौस्तुभ मणि से विभूषित, वक्ष पर लक्ष्मी देवी को धारण किए और अपने साकार अस्त्रों से सेवित। समस्त अंगों से भूमि पर साष्टांग प्रणाम करते हुए ब्रह्मा और देवताओं ने उस परम पुरुष की स्तुति की।

श्रीब्रह्मोवाच

अजातजन्मस्थितिसंयमाया-

गुणाय निर्वाणसुखार्णवाय ।

अणोरणिम्नेऽपरिगण्यधाम्ने

महानुभावाय नमो नमस्ते ॥ ८ ॥

श्रीब्रह्मोवाच अजातजन्मस्थितिसंयमाया- गुणाय निर्वाणसुखार्णवाय अणोरणिम्नेऽपरिगण्यधाम्ने महानुभावाय नमो नमस्ते

अर्थ: ब्रह्मा ने प्रार्थना की — आपको बारम्बार नमस्कार है, जो मोक्ष-सुख के सागर हैं, जिनमें न जन्म है न स्थिति न संहार, जो गुणों से परे हैं, जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर हैं, जिनका धाम अगणनीय है और जिनकी महिमा अपरिमित है। (स्कन्ध 8, अध्याय 6, श्लोक 8)

ब्रह्मा की स्तुति भगवान को समस्त का आदि, मध्य और अन्त — जैसे घट के लिए मिट्टी — के रूप में आराधनी है, जिन्होंने अपनी शक्ति से विश्व की रचना की और फिर उसमें अन्तर्यामी रूप से प्रवेश किया, उन्हीं गुणों से अस्पृष्ट रहते हुए जिन्हें उन्होंने प्रवर्तित किया।

ब्रह्मा ने आगे कहा: जो वास्तव में परम कल्याण चाहते हैं, वे वैदिक विधि से इसी रूप की उपासना करते हैं, और उन्हें भगवान में ही तीनों लोक समाहित दिखाई देते हैं (श्लोक 9)। केवल भक्ति-भाव की सेवा से ही — जैसे काष्ठ से अग्नि उत्पन्न होती है अथवा गाय के दूध से दूध — पुण्यात्मा भी उनके निकट पहुँच सकते हैं, अन्य कोई साधन सफल नहीं होता (श्लोक 12)। और चूँकि वे स्वयं, शिव, तथा समस्त देवता उसी एक महाग्नि से उठी चिंगारियाँ मात्र हैं, ब्रह्मा ने स्वीकार किया कि वे अपनी बुद्धि से यह नहीं जान सकते कि उनके लिए वास्तव में क्या हितकर है, अतः उन्होंने भगवान से ब्राह्मणों और देवताओं के योग्य मुक्ति का साधन प्रदान करने की प्रार्थना की (श्लोक 15)।

जिन्हें वे इतने काल से खोज रहे थे, उन्हें अपने समक्ष प्रकट देखकर देवताओं ने वैसा आनन्द अनुभव किया जैसा दावानल से झूलसे हाथी गंगा के शीतल जल तक पहुँचकर अनुभव करते हैं, और उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि वे उस प्रयोजन को पूर्ण करें जिसके लिए उन्होंने उनके चरणों की शरण ली है।



सहस्र सूर्यों के समान तेजोमय भगवान प्रणत देवताओं के समक्ष प्रकट होते हैं; केवल ब्रह्मा और शिव ही उनके मरकत-सम रूप को देख पाते हैं, और ब्रह्मा स्तुति अर्पित करते हैं (श्लोक 1-15)।

सहस्र सूर्यों के समान तेजोमय भगवान साष्टांग देवताओं के समक्ष प्रकट होते हैं; केवल ब्रह्मा और शिव ही उनके मरकत-श्याम रूप को देख सकते हैं, और ब्रह्मा स्तुति करते हैं (श्लोक 1-15)।

भगवान का परामर्श — सान्धे में सागर मथो

उनके हृदयों को यथावत् जानकर भगवान ने देवताओं से मेघ-गर्जन-सी गम्भीर वाणी में कहा। यद्यपि वे अकेले ही उनका प्रयोजन पूर्ण करने में समर्थ थे, फिर भी वे क्षीरसागर-मन्थन को अपनी दिव्य लीला के रूप में करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने एक योजना दी।

श्रीभगवानुवाच

हन्त ब्रह्मन्नहो शम्भो हे देवा मम भाषितम् ।

शृणुतावहिताः सर्वे श्रेयो वः स्याद् यथा सुराः ॥ १८ ॥

श्रीभगवानुवाच हन्त ब्रह्मन्नहो शम्भो हे देवा मम भाषितम् शृणुतावहिताः सर्वे श्रेयो वः स्याद् यथा सुराः

अर्थ: भगवान ने कहा — हे ब्रह्मा, हे शिव, हे देवताओ, आप सब मेरे वचन को ध्यानपूर्वक सुनो, जिससे तुम्हारा कल्याण हो। (स्कन्ध 8, अध्याय 6, श्लोक 18)

उनका परामर्श विधि जितना ही ज्ञान का भी था। अभी, उन्होंने कहा, दानवों और दैत्यों से सन्धि करो, जो इस समय भाग्य के अनुकूल हैं, जब तक तुम्हारा सौभाग्य स्वयं न लौट आए; जब लक्ष्य महान हो, तब शत्रुओं को भी सन्धि से जीतना पड़ता है। उन्होंने इसकी तुलना सर्प और चूहे की उस पुरातन नीति से की जो एक ही टोकरी में बन्द हों: जहाँ महान प्रयोजन की माँग हो, वहाँ कुछ काल के लिए स्वाभाविक शत्रु से भी सौम्यता से व्यवहार करना पड़ता है (श्लोक 20)। फिर उन्होंने अमृत उत्पन्न करने का साधन बताया — वह पेय जिसे पीकर मृत्यु के मुख में पड़ा भी अमर हो जाए।

क्षिप्त्वा क्षीरोदधौ सर्वा वीरुत्तृणलतौषधीः ।

मन्थानं मन्दरं कृत्वा नेत्रं कृत्वा तु वासुकिम् ॥ २२ ॥

सहायेन मया देवा निर्मन्थध्वमतन्द्रिताः ।

क्लेशभाजो भविष्यन्ति दैत्या यूयं फलग्रहाः ॥ २३ ॥

क्षिप्त्वा क्षीरोदधौ सर्वा वीरुत्तृणलतौषधीः मन्थानं मन्दरं कृत्वा नेत्रं कृत्वा तु वासुकिम् सहायेन मया देवा निर्मन्थध्वमतन्द्रिताः क्लेशभाजो भविष्यन्ति दैत्या यूयं फलग्रहाः

अर्थ: समस्त प्रकार की ओषधियाँ, तृण, लताएँ और पौधे क्षीरसागर में डालकर, मन्दराचल को मन्थन-दण्ड और वासुकि को मन्थन-रस्सी बनाकर, हे देवताओ, मुझे सहायक मानकर अथक भाव से सागर मथो। दैत्य परिश्रम भोगेंगे, जबकि तुम फल पाओगे। (स्कन्ध 8, अध्याय 6, श्लोक 22-23)

उन्होंने असाधारण कोमलता का परामर्श भी जोड़ा: असुर जो चाहें उसे स्वीकार कर लेना, क्योंकि क्रोध से अधिक मधुर वचनों से सधता है; सागर से उठने वाले घोर कालकूट विष से मत डरना; और सबसे बढ़कर, जब रत्न प्रकट हों, तब लोभ और क्रोध को स्थान न देना। इस प्रकार निर्देश देकर भगवान उनकी दृष्टि से अन्तर्धान हो गए।



भगवान् देवताओं को परामर्श देते हैं कि वे असुरों से सन्धि करें और मन्दराचल को मथानी तथा वासुकि को रस्सी बनाकर क्षीरसागर का मन्थन करें, जिसमें वे स्वयं उनके सहायक होंगे (श्लोक 16-25)।

भगवान् देवताओं को असुरों से सन्धि करने और मन्दराचल को दण्ड तथा वासुकि को रस्सी बनाकर, स्वयं को सहायक मानकर क्षीरसागर मथने का परामर्श देते हैं (श्लोक 16-25)।

बलि से सन्धि और मन्दराचल का उखाड़ा जाना

भगवान् को नमस्कार करके ब्रह्मा और शिव अपने धामों को लौटे, और देवता दैत्यराज बलि से मिलने गए। बलि पूर्ण शक्ति में विराजमान था, तीनों लोकों को जीत चुका था, दैत्य-सेनापतियों से रक्षित था — फिर भी वह नीति में निपुण था और जानता था कि कब युद्ध करना है और कब सन्धि। शत्रुओं को देखते ही उत्तेजित होने वाले अपने सेनापतियों को रोककर उसने वह मैत्रीपूर्ण प्रस्ताव सुना, और वह उसे तथा दैत्य-प्रमुखों शम्बर, अरिष्टनेमि आदि को रुचिकर लगा। इस प्रकार देवता और असुर, पूर्व शत्रु, एक सन्धि में बँधे और अमृत के लिए अपनी शक्तियाँ मिलाई।

साथ मिलकर उन्होंने मन्दराचल को उखाड़ा और सिंहों की भाँति गरजते हुए उसे सागर-तट की ओर ले चले। परन्तु वह पर्वत स्वर्णमय सुमेरु के समान विशाल था, और उसे बहुत दूर तक ढोने के पश्चात् इन्द्र, बलि आदि थक गए और आगे न ले जा सके। वह उनके हाथों से छूटकर गिर पड़ा और अपने अपार भार से अनेक देवताओं और असुरों को कुचल गया।





अब मित्र बने पूर्व-शत्रु देवता और असुर मन्दराचल को उखाड़कर समुद्र तक ले जाने का प्रयास करते हैं, पर पर्वत अत्यधिक भारी निकलता है और गिर पड़ता है (श्लोक 27-35)।

अब मित्र बने पूर्व शत्रु — देवता और असुर — मन्दराचल को उखाड़कर सागर तक ले जाने का प्रयास करते हैं, पर पर्वत अत्यधिक भारी सिद्ध होकर गिर पड़ता है (श्लोक 27-35)।

भगवान पर्वत को गरुड़ पर ले जाते हैं

उन्हें हतोत्साह, उनकी भुजाएँ, जाँघें और गर्दन पर्वत के नीचे टूटी देखकर भगवान तत्काल गरुड़ पर प्रकट हुए।

तांस्तथा भग्नमनसो भग्नबाहूरुक्कन्धरान् ।

विज्ञाय भगवांस्तत्र बभूव गरुडध्वजः ॥ ३६ ॥

तांस्तथा भग्नमनसो भग्नबाहूरुक्कन्धरान् विज्ञाय भगवांस्तत्र बभूव गरुडध्वजः

अर्थ: देवताओं और असुरों को इस प्रकार हतोत्साह तथा उनकी भुजाएँ, जाँघें और गर्दन टूटी जानकर, गरुडध्वज भगवान वहाँ अपने वाहन पर प्रकट हुए। (स्कन्ध 8, अध्याय 6, श्लोक 36)

एक ही दृष्टि से उन्होंने देवताओं और असुरों को ऐसे पुनर्जीवित कर दिया मानो वे कभी आहत हुए ही न हों। फिर उस विशाल पर्वत को मानो खेल-खेल में एक हाथ से उठाकर उन्होंने गरुड़ पर रखा, स्वयं पक्षी पर आरुढ़ हुए, और देवताओं-असुरों से घिरे हुए सागर-तट तक उड़े। पर्वत को समुद्र-तट पर उतारकर उन्होंने गरुड़ को विदा किया — जो हट गया जिससे नागराज वासुकि, जो अपने चिर-शत्रु गरुड़ से डरता था, मन्थन में अपने भाग के लिए सुरक्षित रूप से आ सके। इस प्रकार भगवान के अपने बल और दूरदर्शिता से महान मन्थन के आरम्भ हेतु सब कुछ तैयार हो गया।

यह सतर्क क्रम — पतित देवताओं-असुरों को ठीक-ठीक पुनर्जीवित करना, फिर ठीक उसी क्षण गरुड़ को विदा करना जब वासुकि की सुरक्षा की आवश्यकता थी — स्वयं एक शिक्षा है। जहाँ ऐसी घटनाओं को देखने वाले असुर उन्हें संयोग मात्र मानकर टाल देते हैं, वहाँ शास्त्र दृढ़ता से कहते हैं कि यहाँ कुछ भी आकस्मिक नहीं है: जो भगवान प्रकृति के कार्यों को स्वयं संचालित करते हैं, उन्होंने ही प्रत्येक चरण का समय निश्चित किया। भक्त वस्तुओं की साधारण व्यवस्था में भी भगवान की योजना देखता है; केवल अश्रद्धालु ही इसे संयोग कहते हैं। पर्वत का गिरना और भगवान का उसे उठाना, गरुड़ का जाना और वासुकि का आना — ये सब एक ही दिव्य योजना के अंग हैं (श्लोक 36-39)।



भगवान गरुड़ पर प्रकट होते हैं, कुचले हुए देवताओं और असुरों को एक दृष्टि से पुनर्जीवित करते हैं, और गिरे हुए पर्वत को एक हाथ से उठाकर समुद्र-तट तक ले जाते हैं (श्लोक 36-39)।

भगवान गरुड़ पर प्रकट होते हैं, कुचले हुए देवताओं और असुरों को एक ही दृष्टि से पुनर्जीवित करते हैं, और गिरे पर्वत को एक हाथ से उठाकर सागर-तट तक ले जाते हैं (श्लोक 36-39)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान सच्ची प्रार्थना का उत्तर स्वयं देते हैं। ब्रह्मा की स्तुति भगवान को उनके अपने तेजोमय रूप में प्रकट कर देती है। जब हृदय सचमुच भगवान की ओर मुड़ता है, वे दूर नहीं रहते (श्लोक 1-8)।
2. श्रेष्ठ लक्ष्य के लिए सहयोग में शत्रुओं से सन्धि भी अपेक्षित हो सकती है। भगवान देवताओं को अमृत पाने के लिए असुरों से भी सन्धि का परामर्श देते हैं। ज्ञान कभी संघर्ष में नहीं, अपितु धैर्य और सन्धि में होता है (श्लोक 19-20)।
3. मधुर वचन क्रोध से अधिक साधते हैं। “असुर जो चाहें उसे स्वीकार कर लो,” भगवान कहते हैं, “क्योंकि कोप से अधिक मधुर वाणी से सधता है।” कोमलता दुर्बलता नहीं, अपितु ज्ञानी के हाथ में नीति है (श्लोक 24)।
4. सौभाग्य आने पर लोभ और क्रोध से सावधान रहो। रत्नों के उठने से पूर्व ही भगवान देवताओं को उन पर लोभ या कलह न करने की चेतावनी देते हैं। समृद्धि भी हृदय की उतनी ही परीक्षा लेती है जितनी विपत्ति (श्लोक 25)।

5. हमारे प्रयास भगवान की सहायता से ही सफल होते हैं। समस्त देवता और असुर मिलकर भी पर्वत को ढो नहीं पाते; भगवान उसे एक हाथ से उठा लेते हैं। हर प्रयास के पीछे वही सच्चे कर्ता हैं (श्लोक 22-23, 36-38)।

एक भक्तिमय चिन्तन

समस्त देवताओं और समस्त असुरों — सृष्टि के सर्वाधिक बलशाली प्राणियों — को मन्दराचल को सागर की ओर ढोते, गरजते और फिर बीच रास्ते उसके नीचे गिरते देखने में एक सौम्य विनोद है, और एक गहरी शिक्षा भी। यह हमारी अपनी बड़ी योजनाओं के कितने समान है: हम अपने सहयोगी जुटाते हैं, अपना बल बटोरते हैं, और यह निश्चय करके निकलते हैं कि हम स्वयं यह भार उठा लेंगे, और कहीं मार्ग में वह हम पर गिर पड़ता है। भगवान की प्रतिक्रिया मार्मिक है। वे उन्हें विफलता के लिए डाँटते नहीं; वे एक दृष्टि से उन्हें पुनर्जीवित करते हैं और फिर उसी पर्वत को, जिसने उन्हें कुचला था, इतनी सहजता से उठा लेते हैं जैसे बालक कोई खिलौना उठाता है। जिस अमृत को वे खोज रहे थे वह सचमुच मथा जाएगा — पर उनके अकेले के बल से नहीं। यह अध्याय आत्मनिर्भरता के भ्रम को बिना किसी लज्जा के धीरे से तोड़ देता है। यह बस हमें भगवान को वह करते दिखाता है जो हम बिल्कुल नहीं कर सकते, और हमें आमन्त्रित करता है कि हम उन्हें, जैसा उन्होंने देवताओं से कहा, इस कार्य में अपना सहायक बनने दें।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज एक ऐसा कार्य या चिन्ता चुनें जो उठाने में अत्यधिक भारी लगती हो — एक भार जिसके नीचे आप अकेले जूझ रहे हैं — और उसे सचेत रूप से भगवान को सौंप दें जैसे देवताओं ने उन्हें पर्वत सौंपा था। अपना प्रयास आरम्भ करने से पूर्व रुककर कहें, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” उन्हें अपना सहायक बनने का निमन्त्रण देते हुए, यह मानने के बजाय कि सारा भार आप पर ही है। फिर अपना कर्तव्य हल्के हृदय से करें, इस विश्वास के साथ कि जो एक हाथ पर पर्वत उठाते हैं वे आपको उठा रहे हैं।

उपसंहार

आठवें स्कन्ध का षष्ठ अध्याय हमें दिखाता है कि सृष्टि के सबसे बलशाली प्राणी भी एक ही पर्वत के आगे थककर रुक जाते हैं, और स्वयं भगवान उसे एक हाथ से सहजता से उठा लेते हैं। असुरों से सन्धि से लेकर लोभ और क्रोध की चेतावनी तक, उनकी सम्पूर्ण योजना एक ही सत्य की ओर संकेत करती है: यह सम्पूर्ण कार्य न देवताओं के बल से सिद्ध होता है, न असुरों के, अपितु उन्हीं भगवान के बल से जो इसके पीछे मौन खड़े रहते हैं। महान मन्थन की समस्त तैयारी अब पूर्ण हो चुकी है। अगले अध्याय में क्षीरसागर का मन्थन आरम्भ होगा — और उसके साथ घोर विष का उदय तथा भगवान शिव की करुणा।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, षष्ठ अध्याय, पृष्ठ 758–761।
- श्रृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-6-the-lord-appears-and-mount-mandara-is-carried-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

